नपुंसके भावेक्तः

इस सूत्र के अनुसार भाव अर्थ में क्तप्रत्ययान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के साथ 'कर्तृकर्मणोः कृति' के अनुसार षष्ठी होती है,

यथा - मयूरस्य नृत्यम् (मोर का नाच)।

छात्रस्य हसितम् (छात्र का हँसना)।

कोकिलस्य व्याहृतम् (कोयल का कूकना)।

कृत्यानां कर्तरि वा

कृत्य प्रत्ययान्त शब्दों के योग में कर्ता में तृतीया या षष्ठी होती है,

यथा –

पिता मम पूज्यः, पिता मया पूज्यः (पिताजी मेरे पूज्य हैं)।

न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः (नौकरों को अपने स्वामियों को न ठगना चाहिए)

कृत्य प्रत्ययान्त क्रियाएँ तिङन्त क्रियात्रों में इस प्रकार बदलेगी

पिता मम पूज्य:	अहं पितरं पूजयेयम् ।
प्रभवोऽनुजीविभिः न वञ्चनीयाः	प्रभून् अनुजीविनः न वञ्चयेयु:

कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे

बार-बार या अनेक बार अर्थ प्रकट करने वाले "द्विः, त्रिः" शब्दों अथवा 'अष्टकृत्वः 'शतकृत्वः अर्थबोधक संज्ञा विशेषण अव्यय शब्दों के साथ समयवाची शब्द में सप्तमी का भाव प्रकट होने पर भी षष्ठी होती है,

यथा-

द्विरह्नो भोजनम् (दिन में दो बार भोजन)

शतकृत्वस्तवैकस्याः स्मरत्यह्नो रघूत्तमः (रघुश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जी तुम्हें दिन में सौ बार याद करते है।)

जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्

हिंसार्थक √जस् (णिजन्त) नि तथा प्र पूर्वक √हन्, √क्रथ् (णिजन्त), √नट् (णिजन्त) तथा √पिष् धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है,

यथा

निजौजसो जासयितुं जगद् द्रुहाम् (संसार के द्रोहियों को अपने बल से मारने के लिए)

अपराधिनः निहन्तुं, प्रहन्तुं, प्रणिहन्तुं वा (अपराधी के मारने के लिए)।

बधिकस्य नाटयितुं क्राथयितुं वा (बधिक के वध करने के लिए)।

क्रमेण पेष्टुं भुवनद्विषामपि (क्रमशः जगद् द्रोहियों के नाश के लिए)।

व्यवहृपणोः समर्थयोः

'सौदा का लेन-देन करना', 'जुआ में लगा देना' इन अर्थों की वाचक √व्यवहृ और √पण् धातुओं के योग में इनके कर्म में षष्ठी होती है,

यथा-

शतस्य व्यवहरणं पणम् (सैकड़ों का लेन-देन करना)

प्राणानामपणिष्टासौ (उसने प्राणों की बाजी लगा दी)।

परन्तु द्वितीया का प्रयोग प्रायः मिलता है,

यथा

कृष्णां पणस्व पांचालीम् (पांचालराज की कन्या द्रौपदी को दाँव पर लगा दो)।

दिवस्तदर्थस्य

√दिव् धातु का जब उपर्युक्त अर्थ में प्रयोग होता है तब उसके योग में भी कर्म में षष्ठी होती है,

यथा-शतस्य दीव्यति (सौ का जुआ खेलता है)।

परन्तु √दिव् का उपर्युक्त अर्थ न होने पर कर्म में द्वितीया ही होती है, यथा-

हरिं दीव्यति (हरि की स्तुति करता है)।

जब किसी घटना के हुए कुछ समय बीता हुआ बतलाया जाता है तब बीती घटना के वाचक शब्द षष्ठी में प्रयुक्त होते हैं, यथा-

कतिपये संवत्सरास्तस्य तपस्तप्यमानस्य (तप करते हुए उन्हें कई वर्ष हो गये हैं)।

अद्य दशमो मासस्तातस्योपरतस्य (मुद्राराक्षसे)।

अंशांशिभाव या अवयवावयविभाव होने पर अंशी तथा अवयवी में षष्ठी होती है, यथा-

जलस्य बिन्दुः,

अयुतं शरदां ययौ (दस हजार वर्ष बीत गये)

रात्रेः पूर्वम् ,

दिनस्य उत्तरम् ।

प्रिय, वल्लभ तथा इसी अर्थ के वाचक शब्दों के योग में षष्ठी होती है, यथा-

कायः कस्य न वल्लभः ।

प्रकृत्यैव प्रिया सीता रामस्यासीत् ।

विशेष, अन्तर आदि शब्दों के योग में जिनमें विशेष या अन्तर दिखाया जाता है वे षष्ठी में होते हैं, यथा-

तव मम च समुद्रपल्वलयोरिवान्तरम् ।

एतावानेवायुष्मतः शतक्रतोश्च विशेषः

(आप और इन्द्र में इतना ही अन्तर है)।